अंताक्षरी प्रतियोगिता

नियम

→ इस प्रतियोगिता मे पाँच राउण्ड रखे जायेंगे

- अक्षर राउण्ड
- शब्द राउण्ड
- परिस्थिति राउण्ड
- अभिनय राउण्ड
- मुखड़ा-अंतरा राउण्ड
- धुन राउण्ड
- चित्र कला राउण्ड
- जिनवर एक मिनिट
- छन्दपूर्ति राउण्ड

1. अक्षर राउण्ड

- अक्षर राउण्ड मे अंतिम अक्षर पर भजन बोलना होगा
- श, ष, एवं स एक समान चल सकते हैं।
- क्ष = क, ष , त्र = त र , ज = य
- भजन आध्यात्मिक ही होना चाहिए

Aman Jain APJ

2. शब्द राउण्ड

आपको एक शब्द दिया जायेगा, वह शब्द भजन पूजन या स्तुति की पहली पंक्ति मे आना चाहिए

मंगल = मङ्गलं भगवान् वीरो...।
अशरीरी = अशरीरी सिद्ध भगवान...।
जिनराज = आज हम जिनराज...।

3. परिस्थिति राउण्ड

= हम आपको एक परिस्थिति बता रहे हैं। आपको परिस्थिति अनुसार भजन या पूजन की पंक्ति बोलना है।

जैसे → आप मन्दिर जा रहे हैं, दूर से मन्दिर दिखने पर आपके मन मे क्या भाव आयेंगे ?
→ ऊँचे ऊँचे शिखरोवाला है जिनमंदिर हमारा...

AMAN JAIN API

4. अभिनय राउण्ड

- इस राउण्ड में आपको अपना एक प्रतिभागी को मंच पर भेजना होगा, उसे संचालक एक भजन बताएगा फिर वह प्रतिभागी उस भजन को अभिनय के माध्यम से आप सभी को बताएगा

→ • आप सभी को भजन 1 मिनट में ही पहचानना है

- अभिनय मौन रहकर करना है अन्यथा आपकी माइनस मार्किंग होगी

- प्रतिभागी का समूह उत्तर ना दे पावे तो अगला समूह उत्तर दे सकता है उत्तर गलत होने पर जितने अंक आप को मिलने है, उतने ही अंक आपके घटाने मे निर्णायक समर्थ है।

Aman Jain APJ

5. ## मुखड़ा - अंतरा राउण्ड

- इस राउण्ड मे हम आपके लिए एक मुखड़ा या अन्तरा बोलेगे। यदि हम मुखड़ा बोलते है तो आपको अन्तरा बोलना है एवं यदि हम अन्तरा बोलते है तो मुखड़ा बोलना है

जैसे-

मुखड़ा - परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है।
आनन्द उल्लसित होता है, होऽऽ सम्यग्दर्शन होता है॥

अन्तरा - वास जिनका वन उपवन मे, गिरि शिखर के नदी तटे।
वास जिनका चित गुफा मे, आतम आनन्द मे रमें॥

6. ## धुन राउण्ड

- इस राउण्ड में कुछ धुने बजायी जायेंगी आपको धुन समझकर हाथ ऊँचा करना है। जो सबसे पहले हाथ खड़ा करेगा, उससे वह धुन पूछी जायेगी।

- सही बतानेवाले को दस अंक एवं हाथ उठाकर भी नही बताने या गलत बताने पर माइनेस दस किये जायेंगे।

AMAN JAIN ART

7. चित्रकला राउण्ड

- इस राउण्ड मे आपके समूह के एक प्रतिभागी को भजन बताया जाएगा
- उस भजन को चित्रकला के माध्यम से अपने समूह तक पहुचाना है
- अगर आपका समूह उत्तर सही देता है तो उसे 10 अंक दिए जाएगे
- उत्तर नही आने पर आप पास कह सकते है।
- अगला समूह अगर उत्तर गलत देता है तो उसके अंक घटा दिए जाएगे

8. जिनवर एक मिनट

- इस राउण्ड मे एक मिनिट मे आप जितने भजन बोलेगे उसी हिसाब से आपके समूह को 2 अंक प्रत्येक भजन के अनुसार दिए जाएगे
- इसके नियम शब्द राउण्ड की तरह ही होंगे
- सही भजन ही मान्य होगे

AMANJAIN APJ

9. छन्दपूर्ति राउण्ड

• इस राउण्ड में संचालक द्वारा एक छन्द की आधी पंक्ति बताई जाएगी आपको उस पंक्तिं को पूर्ण करना है

जैसे आति पुण्य उदय मम आया

1. पावन मेरे नयन भये तुम दरशते ....

2. इस अर्घ्य का क्या मूल है ....

3. शूचि निरमल नीरं गंध सु अक्षत ....

4. शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव ....

5. आतम को हित है सुख सो सुख ....

6. वसु द्रव्य सँवारी तुम ढिंग धारी ....

7. तीन भुवन मे सार ....

8. मंगलं भगवान् वीरो ....

9. मंगलमय मंगलकरण ....

10. प्रभु पतित पावन मे अपावन ....

12. ये: शान्तराग रुचिभि: ....

13. यह अर्घ्य समपर्ण करके प्रभु ....

14.

AMAN JAIN APJ

अन्ताक्षरी प्रतियोगिता सामान्य नियम

- इस प्रतियोगिता मे कोई भी पाँच राउण्ड रखे जायेंगे
- प्रतिभागीयो की संख्या को देखते हुए समूह का निर्माण करे
- तत्काल बनाया गया भजन मान्य नही होगा
- अत्याधिक फिल्मी तर्जों के भजन मान्य नही होंगे
- आपका भजन प्रमाणिक होना चाहिए
- भजन सही बोलने पर ही अंक दिए जाएगे
- नही बोलने पर शून्य मिलेगा
- गलत बोलने पर माइनस मार्किंग
- पासिंग राउण्ड मे बोनस के अंक भी मिलेंगे
- निर्णायक का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा

कुछ अन्य राउण्ड के नाम

- संस्कृत श्लोक शब्द राउण्ड
- बजर राउण्ड

AMANJAIN AP J

१. अक्षर राउण्ड

- अक्षर राउण्ड में अंतिम अक्षर पर गीत बोलना होगा।
- श ष एवं स एक समान चल सकते हैं।
- क्ष = क ष, त्र = त र, ज्ञ = ग चलेंगे।

२. शब्द राउण्ड

आपको एक शब्द दिया जायेगा; वह शब्द भजन, पूजन या स्तुति की पहली पंक्ति मे आना चाहिए:

मङ्गल	–	मङ्गलं भगवान् वीरो.......।
अशरीरी	–	अशरीरी सिद्ध भगवान......।
जिनराज	–	आज हम जिनराज.......।
मुनिराज	–	होली खेलें मुनिराज.....।
परमेष्ठी	–	पञ्च परम परमेष्ठी.....।
मन्दिर	–	मेरे मन मन्दिर.......।
महापुण्यं	–	मैं महापुण्य उदय......।
महिमा	–	महिमा है अगम.....।
वाणी	–	सुनकर वाणी जिनवर.....।
परम दिगम्बर	–	परम दिगम्बर मुनिवर देखे...।
मुद्रा	–	है परम दिगम्बर मुद्रा.....।
जीयरा	–	जीयरा हो जीयरा.....।

शाश्वत	—	ये शाश्वत सुख....।
लहर	—	लहर-लहर लहराए .....।
वाङ्मय	—	केवली कन्ये वाङ्मय गंगे....।
द्वादशांग वाणी	—	चरणों में आ पड़ा हूँ.....।
वीर	—	वीर हिमाचल तैं निकसी....।
ध्यान	—	तिहारे ध्यान की मूरत....।
सुख	—	आतम को हित....।
साधु	—	ऐसें साधु सुगुरु....।
मिथ्यातम	—	मिथ्यातम नासवे को.....।
ज्ञानानन्द	—	मैं ज्ञानानन्द.....।

३. मुखड़ा-अन्तरा राउण्ड

इस राउण्ड में हम आपके लिये एक मुखड़ा या अन्तरा बोलेंगे। यदि हम मुखड़ा बोलते हैं तो आपको अन्तरा बोलना है एवं यदि हम अन्तरा बोलते हैं तो मुखड़ा बोलना है।

१. आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग्य कि हम आये पूजन कों।

२. पिता झलक ज्यों पुत्र में दिखती जिनेन्द्र झलक मुनिराज झलकती।

३. हे प्रभो! चरणों मे तेरे आ गये, भावना अपनी का फल हम पा गये।। मुखड़ा।।
विश्व सारा है झलकता ज्ञान में, किन्तु प्रभुवर लीन हैं निज ध्यान में।।
ध्यान में निज-ज्ञान को हम पा गये, हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये।। अं०।।

४. भावे भजो भावे भजो जिनराया, चौबीस जिनवर पाया जी पाया।। मुखड़ा।
ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व पद वन्दन।।
आतम में अपनापन करके मिथ्यातम को दूर भगाया, जिनवर भजूँ आतम लखूँ, जिनराया।। अं०।।

५. पंखिड़ा ओऽऽऽ पंखिड़ा... पंखिड़ा रे उड़ के जाओ कुण्डलपुर में
तीर्थङ्कर जन्मे आज भरतक्षेत्र में।। मुखड़ा।।
माता त्रिशला ने देखे थे सोलह सपने, उनका फल बताया सिद्धार्थराज ने।
तेजवान बुद्धिमान लाल होयेगा, ज्ञानवान तीर्थङ्कर बाल होयेगा।। अं०।।

६. लिया प्रभु अवतार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार।
त्रिशला नन्दकुमार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार।। मुखड़ा।
आज खुशी है आज खुशी है, हमें खुशी है तुम्हें खुशी है।
खुशियाँ अपरम्पार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार।। अं०।।

७. परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है।
आनन्द उल्लसित होता है, होऽऽऽ सम्यग्दर्शन होता है।। मुखड़ा।
वास जिनका उपवन में, गिरि शिखर के नदी तटे।
वास जिनका चित्त गुफा में, आतम आनन्द में रमें।। अं०।।

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि है।। मुखड़ा।।
तिल तुष मात्र सङ्ग नहिं जिनके, ज्ञान-ध्यान गुणबल है, ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि है।। अं०।।

४. धुन राउण्ड

इस राउण्ड में कुछ धुनें बजायी जायेंगी, आपको धुन समझकर हाथ ऊँचा करना है। जो सबसे पहले हाथ खड़ा करेगा, उससे वह धुन पूछी जायेगी। सही बतानेवाले को दस अंक एवं हाथ उठाकर भी नहीं बताने या गलत बताने पर माइनिस दस किये जायेंगे।

५. परिस्थिति राउण्ड

हम आपको एक परिस्थिति बता रहे हैं। आपको उस परिस्थिति के अनुसार भजन या पूजन की पंक्ति बोलना है।

– आप मन्दिर जा रहे है, दूर से मन्दिर दिखने पर आपके मन में क्या भाव आयेंगे?
ऊँचे-ऊँचे शिखरोंवाला है जिनमन्दिर हमारा..
– जैनधर्म का ध्वज लहरा रहा है, इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करो।
लहर-लहर लहराये केशरिया झण्डा जिनमत का हो जी..
– मन्दिर में प्रवेश करते ही प्रतिमा के दर्शन हुए तो उसे देखकर जो भाव हुए, उन्हें प्रकट करो।
जिनप्रतिमा जिनवर-सी कहिये...
– मुनिराज आपकी कुटिया में पधारे हैं – उन्हें देखकर आपके कैसे भाव होंगे, उन्हें प्रकट करो।
मुनिवर आज मेरी कुटिया में आये हैं...
– आप जैनकुल में पैदा होकर कैसा महसूस करते हैं?
मैं महापुण्य उदय से जिनधर्म पा गया...
– आनन्द के अवसर पर आप लोगों को मन्दिर कैसे बुलवायेंगे।
आओ जिनमन्दिर में आओ...
– परम दिगम्बर साधु को देखकर, उनके जैसा बनने की चाह होने पर अपने अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हो तो?
सन्त साधु बन के विचरूँ........
– मुनिराज के उपदेश से प्रेरित हो किसी ने दीक्षा धारण की तो आप कैसे भाव व्यक्त करेंगे?
धन्य मुनीश्वर आतम हित में छोड़ दिया संसार ....
– सभी जीवों में प्रेम भावना का प्रसार करना है तो कौन-सा भजन/स्तुति गायेंगे?
प्रेम भाव हो सब जीवों........
– यदि जिनवर के अंगों की प्रशंसा के लिये कहा जायें तो किस भक्ति के द्वारा भाव प्रकट करेंगे?
निरखो अंग-अंग जिनवर........
– जब जिनवर के दर्शन पाते हैं तो आपके आन्तरिक रोम कैसे हो जाते हैं?
रोम-रोम पुलकित हो जाये......

छन्दपूर्ति राउण्ड

अति पुण्य उदय मम आया

पावन मेरे नयन भये तुम दरशतें ....

इस अर्घ्य का क्या मूल्य है ....

शुचि निरमल नीरं गंध सु अक्षत ....

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव ....

आतम को हित है सुख सो सुख ....

वसु द्रव्य सँवारी तुम ढिंग धारी ....

तीन भुवन में सार ....

मंगलं भगवान् वीरो ....

मंगलमय मंगलकरण ....

प्रभु पतित पावन मैं अपावन ....

यैः शान्तराग रुचिभिः ....

यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु ....

कार्तिक फाल्गुन साढ़ के ....

उदक–चन्दन–तन्दुल पुष्पकैः ....

जल फल आठों शुचि सार ....

मैं कौन हूँ आया कहाँ से ....

तास भ्रमण की है बहु कथा ....

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिता ....

राजा राणा छत्रपति ....

हाँ का ना, ना का हाँ

इस प्रतियोगिता मे सभी भाग ले सकते है।

1. प्रतिभागियो के नाम पर्ची के माध्यम से निकाले जायेंगे।
2. प्रतिभागियो को पाँच प्रश्न पूछे जायेंगे -
3. • प्रथम तीन प्रश्नो के उत्तर सही देने है और सिर गलत हिलाना है।
   • अन्तिम दो प्रश्नो के उत्तर गलत देने है और सिर सही हिलाना है।
4. निर्णायक का निर्णय ही सर्वमान्य वा अन्तिम निर्णय होगा।

---

1. परमेष्ठी पाँच होते है।
2. कषाय चार होती है।
3. रात को नही खाना चाहिए।
4. नरक गति अच्छी है।
5. तीर्थंकर 25 होते है।
6. तत्व चार होते है।
7. देवताओ की मूछ होती है।

अनुयोग चार होते है।

हम गधे भी हुए है।

तुम जैन हो।

अनछना जल पीना चाहिए।

इन्द्रियाँ पाँच होती है।

तुम अज्ञानी हो।

आज उत्तम क्षमा का दिन है।

तुमने आज नहाया है।

तुम मनुष्य हो।

विदेह क्षेत्र मे 20 तीर्थंकर होते है।

कोई किसी का कर्ता-धर्ता नही है।

हम अनादि काल से मिथ्यादृष्टि है।

पाण्डव पाँच होते है।

पंचकल्याणक पाँच होते है।

तुम बहुत पापी नही हो।

हमें देव शास्त्र गुरु की पूजा करनी चाहिए।

नरक सात होते है।

तुम ब्रह्मचारी हो।

तत्वार्थसूत्र के रचयिता उमास्वामी है।

छहढाला के रचयिता बनारसीदास है।

सुकुमार मुनि ने उपसर्ग किया था।

तुम भगवान आत्मा हो।

30 भगवान बाहुबली के पिता का नाम ऋषभदेव था।

31 तुम भूत हो।

32 बाहुबली पाँचवे तीर्थंकर नही है।

33 व्यसन सात होते है।

34 जिनवाणी सुनना चाहिए।

35 परिग्रह पाँच होते है।

36 प्रमाद के 15 भेद होते है।

37 माता 16 स्वप्न देखती है।

38 विमलनाथ का चिन्ह हिरण है।

39 बारह भावनायें होती है।

40 जैन धर्म महान नही है।

41 जियो और जीने दो आदिनाथ का संदेष है।

42 सम्यग्दर्शन के बिना मोक्ष नही होता।

43 लोभ पाप का बाप है।

44 14 गुणस्थान होते है।

45 धर्म दस नही होते, लक्षण 10 होते है।

46 धर्म से श्रेष्ठ धर्म है।

47 हमे प्रवचन मे नही सोना चाहिए।

48 हमे रात्री मे भोजन करना चाहिए।

49 तुम्हारे घर मे आलू-प्याज नही बनते।

50 तुम्हे मोक्ष जाना है।

51 आरहंत पिता है, जिनवाणी माता है।

हमे पूरे जीवन भर पाप करना चाहिए।
52 काला होना पुण्य कर्म का उदय है।
53 भगवान जगत के कर्ता-धर्ता है।
54 सिद्ध भगवान संसारी है।
55 कमठ ने पार्श्वनाथ भगवान का उपसर्ग दूर किया।
56 आदिनाथ के पिता का नाम नाभिराय था।
57 सिद्ध परमेष्ठी 4 कर्मों से रहित है।
58 क्या सीता सति थी।
59 तुम जानते देखते हो।
60 नेमिनाथ की शादी राजुल से हुई।
61 तुम्हारी मम्मी मंदिर आती है।
62 केवली भगवान चारो लोको को स्पष्ट जानते है।
63 प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र व स्वाधीन है।
64 भरत ने 1 वर्ष तक तप किया।
65 हाथी नारकी जीव है।
66 सीता लव-कुश की सास थी।
67 सभी भगवान तीर्थंकर होते है।
68 परावर्तन 4 होते है।
69 दोष 18 होते है।
70 आचार्य के 36 मूलगुण होते है
71 रत्नकरण्ड श्रावकाचार ग्रन्थ आ. समन्तभद्र द्वारा रचित है
72 दस लक्षण पर्व वर्ष मे 3 बार मनाया जाता है
73

Aman Jain APJ

पार्सल गेम

प्रतियोगिता के नियम

(क) 7 अधिक संख्या होने पर यह प्रतियोगीता वर्गों मे आयोजित की जायेगी

(ख) प्रति 30 सेकण्ड मे एक घण्टी बजेगी जिसके बीच आपको हाथ मे दिया गया पात्र आगे-आगे प्रतियोगियो को देना है

(ग) जिसके हाथ मे [illegible] घंटी बजाने पर पात्र आयेगा उसे यहा आकर पर्ची मे जो नंबर लिखा होगा उसके अनुसार कार्य करना पड़ेगा

(घ) यदि किसी प्रतियोगी के हाथ से पात्र गिर जायेगा तो उसे प्रतियोगिता से बाहर कर दिया जाएगा

(ङ) निर्णायक का निर्णय अन्तिम वा सर्वमान्य होगा

(आप घंटी की जगह कोई भजन इस्तमाल कर सकते हो)

Aman Jain APJ

1. मंदिर जाने की विधि कम शब्दो मे बताईए
2. भगवान को देखकर आपके मन मे कैसे भाव आते है
3. आपको पाठशाला मे बच्चो को भेजना है तो आप बच्चो को किस प्रकार समझाएगी
4. आपके मम्मी-पापा झगड़ रहे है तो आप उन्हे कैसे समझाओगे
5. जो आध्यात्मिक भजन आपको सबसे प्रिय लगता है वह सुनाईए
6. जैन धर्म संबंधित प्रेरणादायक एक छोटी सी कहानी सुनाये।
7. सत्य सत्य आपकी दिनचर्या बताइए
8. अहिंसा के नारे जुलूस मे किस प्रकार लगवांएगे।
9. आपके पति/पिता टीवी देख रहे है और तभी आपको स्वाध्याय करना है तो आप अपने पति/पिता को स्वाध्याय के प्रति किस प्रकार प्रेरित करोगे।
10. वर्तमान मे लोग माला किस प्रकार फेरते है और किस प्रकार फेरनी चाहिए
11. अचानक आपके सामने मन्दिर मे शेर आ जाए तो आप क्या प्रतिक्रिया करेंगे।
12. वर्तमान मे लोग किस तरह पूजा करते है और किस तरह करना चाहिए
13. भजन सुनाईए

Aman Jain Apr

कविता सुनाईए

14. आपकी प्रिय पूजा कौन सी है और क्यो

15. आपको कौन सी भक्ति प्रिय है और क्यो

16. आप कौन सा पाठ प्रतिदिन करते हो और

17. उस पाठ से क्या लाभ है।

18. आप धन और धर्म मे से किसको चुनेगी और क्यो

भगवान और तीर्थंकर मे 5 अंतर बताईए

19. भक्ताम्बर का पहला काव्य सुनाईए

20. दिवाली पर क्या हुआ था

21. किसी पूजा का एक छन्द सुनाईए

22. इस दशलक्षण मे आपने कोई नया नियम

23. लिया है या नहीं, लिया है तो क्यो नही लिया है तो क्यो

24. अगर आपको कोई नियम लेना है तो आप कौन सा नियम लेंगे.

25. पंच परमेष्ठि के मूलगुण सुनाईए

26. णमोकार मंत्र के पाँचों नाम

27. छहढाला का मंगलाचरण सुनाईए

28. अगर एक बार क्षमा माँगने से आपकी सालो पुरानी दुश्मनी खत्म हो जाती है

Aman Jain APJ

तो आप किस प्रकार क्षमा मागेंगे।
29. आप क्षमा के बारे मे क्या जानते है
30. मार्दिव धर्म किस कषाय के अभावरूप प्रकट होती है
31 आपके सामने कोई गरीब आ जाए तो आप उसकी मदद किस प्रकार करेंगे
भजन सुनाईए
32. 24 तीर्थंकरो के नाम या छन्द सुनाईए
33. 5 बालयति तीर्थंकर के नाम बताईए
34. पंच महाव्रतों के नाम बताईए
35. अगर आप सौधर्म इन्द्र होते तो क्या करते
36. अगर आप कुन्द-कुन्द की माँ होते तो आप
37. उन्हे दिक्षा की अनुमति देते
अगर आपका पुत्र / पुत्री दीक्षा लेने के
38. लिए अनुमति मांगे तो आप क्या करेंगे
अगर आपके परिवार मे से कोई अपने
39. नियम से भटक रहा है तो आप उसे कैसे समझाएगे
अगर आपको चक्रवर्ती की संपदा मिल जाए तो
40 आप उससे क्या करोगे
अगर आप मुनि श्रुतसागर होते तो आप क्या करते
41 रक्षाबंधन की घटना फिर से घटित हो उसमे
42 आपको विष्णुकुमार बनाया जाए तो आप क्या करोगे